कम पानी से भी धान की अच्छी फसल ली जा सकती है

पंतनगर। 24 अगस्त, 2009। प्रदेश में सूखे की स्थिति को देखते हुए खरीफ की प्रमुख फसल धान से अधिकतम संभव उपज प्राप्त करने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञानी डा. पी.सी. पाण्डे ने जानकारी देते हुए कहा कि कम पानी की उपलब्धता में भी धान की अच्छी फसल ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि कम पानी की दशा में खेतों में पानी भरने का प्रयास न करें केवल भूमि में नमी बनाये रखें; इससे पानी की मांग पूरी हो जायेगी। ध्यान रहे कि खेत संतृप्त रहे, पूरी नमी बनी रहे और खेत में खरपतवार न रहे। डा. पाण्डे ने बताया कि इस सूखे की स्थिति में यूरिया का पर्णीय छिड़काव (फोलियर स्प्रे) काफी प्रभावकारी एवं उपयोगी होगा। वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों में जब धान की निचली पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगे तब यूरिया का 2 प्रतिशत घोल (2 किलो यूरिया 100 लीटर पानी में) बनाकर सुबह के समय धान की फसल पर छिड़काव करें। 10–15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें। फूल आने के पहले तथा दानों के भराव के दौरान यूरिया के छिड़काव को डा. पाण्डे ने आवश्यक बताया। तेज हवा या बरसात वाले दिन स्प्रे नहीं करना चाहिए।

मृदा विज्ञानी डा. पी.सी. श्रीवास्तव ने बताया कि धान की पीली पड़ रही पत्तियों पर यदि छोटे–छोटे कत्थई धब्बे दिखाई दे रहे हों तो यह सूक्ष्म पोषक तत्व जस्ते की कमी का संकेत है। इसके लिए 5 ग्राम जिंकसल्फेट एवं 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 से 3 बार छिड़काव करें। उन्होंने यह भी बताया कि यदि उपरी पत्तियाँ पीलेपन के साथ–साथ सफेद हो जायें तो भूमि में लौह तत्व की कमी आ रही है। सूखे की दशा में धान की फसल में लौह तत्व की कमी होने की सम्भावना ज्यादा रहती है। इस कमी को दूर करने के लिए फेरस सल्फेट की 10 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर 2–3 बार छिड़काव करें।